सुनील शर्मा

वह अभी भी ज़िंदा है!

मैंने सुना था,
एक बार
एक इंसान
जो हताशा से
बैठ गया था,
उसके पास
एक अजनबी ने जाकर
हाथ बढ़ा दिया
और दोनों
साथ-साथ चले।
मुझे
यह पता है कि वह
जरूर एक
अच्छा इंसान होगा और
एक सहृदय
कवि भी।

उस दिन
जब मैं
अपने कमरे में
अकेला-हताश
महसूस कर रहा था,
सोच रहा था
एक नयी नौकरी
और
एकाकी कमरा,
क्या इस टोरंटो जैसे
ठंडे शहर में ढूँढ पाऊँगा,
उन उदास
लम्हों में,
अचानक
महसूस किया,
एक आदमी मेरे पास

आकर
खड़ा हो गया,
अपना हाथ बढ़ाकर,
और कहने लगा इशारों से,
अब चलो भी भाई,
हम दोनों
साथ-साथ
चलते हैं
एक नए सफर पर।
और मै
उसके साथ
चलने लगा,
बिना बोले,
किसी
हमसफ़र जैसे।
***

एक मुलाकात यह भी

कल ज़ोरों की बारिश हुई
बर्फ भी पड़ी,
टोरंटो सफ़ेद-स्याह हो गया
उस गीली-गीली चादर में,
मैं चन्द डॉलर्स के लिए
किसी अज़नबी के यार्ड में
बर्फ साफ़ कर रहा था,
तब देखा
एक सामान्य-सा पुरुष
चश्मा पहने
मेरे पास आकर खड़ा हो गया है
और
मुस्कुरा रहा है, किसी पुराने दोस्त
की तरह।

मुझे अच्छा लगा
उसका समीप होना
उस सर्द मौसम में,
उस एकाकीपन में,
जब तक मैं
काम करता रहा
वह वहीं खड़ा रहा।
जाते जाते सिर्फ इतना बोला-
मैं फिर मिलने आऊँगा,
भाई तुमसे,
ऐसे-ही किसी एक और
सर्द दिन या रात में,
तुम बिलकुल अकेला
मत महसूस करना।

***